International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 05-08-2024, Accepted: 04-09-2024, Published: 19-09-2024
Volume 10, Issue 3, 2024, Page No. 51-52

मैथिलीशरण गुप्त और भारत–भारती

रामकुमार सिंह
हिंदी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
मैथिलीशरण गुप्त की रचना 'भारत–भारती' के माध्यम से भारतीय राष्ट्रीयता को खोजने का प्रयास किया गया हैद्य गुप्त जी की कविताओं में जनभावना की अभिव्यक्ति मिलती है। यह जनभावना ही राष्ट्रीयता का स्वर बनकर उभरी है। उनकी सांस्कृतिक चेतना जनभावना का प्रतिनिधित्व करती है। दलितों तथा वंचितों के लिए उनके हृदय में अनुराग था। यह नारी स्वतंत्रता के पक्षधर थे। इसी अनुरूप उनके राष्ट्रवाद ने आकृति ग्रहण की थी। इसके अंतर्गत गुप्त जी की रचना के माध्यम से भारतीयता को पहिचानने की कोशिश की है।

मूल शब्दः नैतिक, महात्मा गाँधी, स्वतन्त्रता, पराधीन, राष्ट्रीय, विरोध, शासन

मैथिलीशरण गुप्त का काव्य युग का प्रतिबिंब है। वह जिस कालखंड में रचना कर रहे थे, उस समय स्वाधीनता आंदोलन का उभार था। इस दौर में कवि की काव्य–वस्तु यदि राष्ट्रीय चेतना से आवृत्त हो तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कवि का कार्य जागृत्ति का है अतीत के गौरव की स्मृति के साथ वर्तमान की दृष्टि को निर्मित करना सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की प्रक्रिया का अंग है। यह गुप्त जी की कविता का मूल प्रतिपाद्य है।

मैथिलीशरण गुप्त का जन्म 1886 ई० में हुआ था और उनके जन्म के एक वर्ष पूर्व भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना बम्बई में हुई थी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, जिसने स्वतंत्रता संघर्ष को स्वरूप प्रदान किया तथा उसकी वैचारिकता से ही आंदोलनों को ऊर्जा मिलती रही, भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष का केंद्र बिंदु बन गई थी। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने पहले प्रतिवेदनों तथा याचिकाओं को अपना माध्यम बनाया, किंतु 1905 ई० के बाद वास्तविक संघर्ष की शुरुआत हो चुकी थी। 1917 ई० में महात्मा गाँधी चंपारण सत्याग्रह' के माध्यम से भारतीय राजनीति के क्षितिज पर अवतरित हो चुके थे। राष्ट्रीय स्वतंत्रता संघर्ष में उन्होंने 'सत्याग्रह' और 'अहिंसा' को हथियार बनाकर प्रस्तुत किया। गाँधीवादी आंदोलनों के बीच ही मैथिलीशरण गुप्त की लेखनी से काव्यधारा फूट रही थी। गुप्त जी पर महात्मा गाँधी के विचारों का अत्यधिक प्रभाव दिखता है। युग के संपूर्ण बोध को काव्यात्मक बोध में ढालकर रचने का कार्य गुप्त जी की लेखनी से संभव हो सका। अपने सभी समसामयिक कवियों की तुलना में गुप्त जी का सृजन युगबोध के दायित्व को अधिक संभावनाओं से उजागर करता है।

मैथिलीशरण गुप्त ने युग की माँग के अनुसार काव्य रचना की। यह द्विवेदी युग की नैतिक दृष्टि से प्रभावित हुए किंतु उनकी नैतिकता पर युगीन नैतिक मूल्यों का प्रभाव अधिक था। राष्ट्रीयता को सांस्कृतिक संदर्भ देने के कारण ही महात्मा गाँधी ने गुप्त जी को राष्ट्रकवि कहकर संबोधित किया। गुप्त जी ने कविता को जनसाधारण से जोड़कर उनकी आज्ञाओं–आकांक्षाओं को व्यक्त करने वाली संजीवनी शक्ति बना दी। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने लिखा है– गुप्तजी की प्रतिमा की सबसे बड़ी विशेषता है – कलानुसरण कि क्षमता अर्थात् उत्तरोत्तर बदलती हुई भावनाओं और काव्य प्रणालियों को ग्रहण करते चलने की शक्ति। इस दृष्टि से हिंदी भाषी जनता के प्रतिनिधि कवि ये निःसंदेह कहे जा सकते हैं।

भारत का राजनैतिक शोषण होने के साथ–साथ ब्रिटिश शासन के दौरान आर्थिक शोषण और दोहन भी हो रहा था भारतीय बाज़ार विदेशी वस्तुओं से भर गए थे स्थानीय उद्योगों और हस्तशिल्पों को चोट पहुंची थी भारतीय जनता इस बात को समझ चुकी थी कि ब्रिटिश शासक अर्थव्यवस्था को बर्बाद कर रहे हैं और अपना घर भर रहे हैं। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने भारत दुर्दशा में इस बात का जिक्र किया था कि भारत का सारा धन विदेश चला जा रहा है। मैथिलीशरण गुप्त एक जागरूक कवि थे और उन्होंने अंग्रेजों की इस चाल का पर्दाफाश किया था–

क्षत्रिय सुनो अब तो कुयश की कालिमा को मेंट दो
निज देश को जीवन सहित तन मन तथा धन भेंट दो
वैश्यो सुनो व्यापार सारा मिट चुका है देश का
सब धन विदेशी हर रहे हैं पार क्या है क्लेश का

बीसवीं शताब्दी भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक जागरण की सदी थी। इस सदी में नई सोच विकसित हो रही थी। नारी, दलित तथा शोषित वर्ग अपनी पहचान के लिए संघर्ष करने लगे थे। जागृति का संदेश सभी दिशाओं में प्रसारित हो रहा था। किसानों मजदूरों ने अपने अधिकार के लिए लड़ना आरंभ कर दिया था और गाँधी जी इन समूहों की आवाज बनकर उनके आंदोलन को बल दे रहे थे। इस दौर में मैथिलीशरण गुप्त ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की चेतना के साथ एकता और अखंडता को प्रोत्साहित किया। गुप्त जी की कविताओं में जनभावना की अभिव्यक्ति मिलती है। यह जनभावना ही राष्ट्रीयता का स्वर बनकर उभरी है। उनकी सांस्कृतिक चेतना जनभावना का प्रतिनिधित्व करती है। दलितों तथा वंचितों के लिए उनके हृदय में अनुराग था। यह नारी स्वतंत्रता के पक्षधर थे। इसी अनुरूप उनके राष्ट्रवाद ने आकृति ग्रहण की थी।

मैथिलीशरण गुप्त युग की समस्याओं के प्रति संवेदनशील थे। साम्राज्यवाद के विरोध तथा स्वराज की स्थापना के लिए उनकी काव्य रचनाओं का स्वर ऊँचा हो जाता है। कवि का हृदय देश की वर्तमान दशा से क्षुब्ध था इसलिए उनका रोम–रोम भारत माता को स्वतंत्र करने के लिए व्याकुल था साकेत में स्वतंत्रता के लिए उनकी छह कविता का रूप ले लेती है–

"भारत लक्ष्मी पड़ी राक्षसों के बंधन में,
सिंधु पार वह बिलख रही व्याकुल मन में।
बैठा हूँ मैं भण्ड साधुता धारण करके
अपने मिथ्या भरत नाम को नाम न घर के।

मैथिलीशरण गुप्त सत्याग्रह आंदोलन के समर्थक थे। उनकी आस्था इन आंदोलनों में थी। साकेत में राम के वन जाने के प्रसंग के दौरान अयोध्यावासियों के सत्याग्रह का चित्र दर्शाकर उन्होंने गाँधी जी के अहिंसात्मक आंदोलन को काव्यात्मक समर्थन प्रदान किया।

"जाओ, यदि जा सको रौद हमको यहाँ
यों कह पथ में लेट गए बहुजन वहाँ।"

मैथिलीशरण गुप्त की राष्ट्रीय भावना देशभक्ति और देश प्रेम के रूप में प्रस्फुटित हुई है। गुप्त जी का सम्पूर्ण रचना संसार राष्ट्रीयता कि भावना से ओत–प्रोत है द्य इसी देशभक्ति और राष्ट्रीयता कि भावना के कारण उन्हें जेल कि यात्रा भी करनी पड़ी द्य ब्रिटिश शासन का विरोध करने के लिए उन्होंने हिन्दू–स्लिम एकता को प्रोत्साहित किया।
भारत–भारती मैथिलीशरण गुप्त की प्रमुख रचना है। इस रचना में कवि ने भारत की दुर्दशा का वर्णन किया है और बताया है कि भारत पहले क्या था और आज किस दशा में पहुँच गया है। कवि भारत के भविष्य को लेकर चिंतित हैद्य इस रचना में स्वदेश प्रेम को दर्शाते हुए वर्तमान और भावी दुर्दशा से उबरने के लिए समाधान खोजा गया है।
मैथिलीशरण गुप्त भारत भारती के माध्यम से यह बताना चाहते थे कि अपने गौरव को भूलने के कारण ही हमारी वर्तमान दशा बिगड़ गई है। कवि अपने वर्तमान से असंतुष्ट है और भविष्य के प्रति चिंतित। अतीत के स्वर्णिम तथा मनोरम रूप का वर्णन करते हुए मैथिलीशरण गुप्त ने भारतीय संस्कृति की वर्तमान उपेक्षा को परतंत्रता का कारण माना है। भारतीय जनता की दुरावस्था को कवि अपने अतीत से दूर जाने की प्रवृत्ति को मानता है। भारत भारती, वस्तुतः अस्मिता की पहचान की रचना है। किसी देश को पराधीनता से मुक्त होना है और उसे निरंतर अपनी स्वतंत्रता बनाए रखना है तो भाग्यवाद से ऊपर उठते हुए जागृति को अपनाना होगा। गुप्त जी ने इस भावना को स्पष्ट करते हुए लिखा है–

"बैठे हुए, बैठे हुए हो व्यर्थ क्यों? आगे बढ़ो, ऊँचे चढ़ो,
हे भाग्य की क्या भावना? अब पाठ पौरुष का पढ़ो।

गुप्त जी अतीत की ओर केवल सांस्कृतिक ओज को पाने जाते हैं, वह वर्तमान से अधिक जुड़े हैं।

"अब तो उठो, हे बंधुओं निज देश की जय बोल दो.
बनने लगे सब वस्तुएँ, कल–कारखाने खोल दो।
जावे यहाँ से और कच्चा माल अब बाहर नहीं,
हो 'मेड इन' के बाद बस इंडिया' ही सब कहीं।"

अंग्रेजी दासता के प्रति जनसामान्य में विक्षोभ की भावना लगातार विस्तृत हो रही थी। संपूर्ण देश आंदोलित था। गुप्त जी ने साहित्य सृजन को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ा है। देश की आजादी के लिए जनता का मार्गदर्शन करने वाले नेताओं के प्रति उनकी आस्था अटल थी।
भारतेन्दु युग में कवियों ने भारत की दुर्दशा का विवरण किया किंतु संघर्ष के लिए जनचेतना का कोई प्रयास वहाँ नहीं दिखता। द्विवेदी के माध्यम से सशक्त वाणी का प्रसार किया। प्रसिद्ध समीक्षक रामस्वरूप चतुर्वेदी ने लिखा है– 'राष्ट्रीय अपने पूरे विस्तार और वेग में मैथिलीशरण गुप्त की भारत"
इसका प्रथम खण्ड 'अतीत खण्ड' है, द्वितीय खण्ड वर्तमान खण्ड है जबकि तीसरा खण्ड भविष्यत खण्ड' है। इन तीनों खण्डों में जागरण का स्वर प्रधान है। यहाँ स्वमूल्यांकन को महत्व दिया गया है। अतीत के वैभव के सामने वर्तमान की पीड़ा का चित्र उपस्थित किया गया है–

"हम कौन थे, क्या हो गए हैं और क्या होंगे अभी, आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएँ सभी।" क्या होंगे अभी से भारत के सांस्कृतिक गौरव और सभ्यता के ऊपर विदेशी सत्ता की निरंकुशता के बनने वाले प्रभाव की चिंता है। यह स्वतंत्रता के लिए तैयार करने का काव्यात्मतक प्रयास है। इसी प्रयास में कवि ईश्वर को भारत की पुनर्रचना के लिए आग्रह करता है।

देश के प्रति यह अनुराग गुप्त जी की राष्ट्र के प्रति प्रेम को दर्शाता है। उनके प्रयत्न से ही भारत के स्वराज्य की प्राप्ति हो सकती है। गुप्त जी नवयुवकों का आह्वान करते हुए लिखते हैं–

"हे नवयुवकों। देश भर की दृष्टि तुम पर ही लगी, हे मनुज जीवन की तुम्हीं में ज्योति सब से जगमगी। दोगे न तुम तो कौन देगा योग देशोद्धार में? उन्होंने ब्रिटिश शासन के विरूद्ध आंदोलन के लिए भारतीय जनता को प्रोत्साहित किया। भारत भारती' में गुप्त जी ने लिखा है–

"है ब्रिटिश शासन की कृपा ही यह कि हम कुछ जग गए, स्वाधीन है हम धर्म में, सब भय हमारे भग गए। निज रूप को फिर हम सभी कुछ–कुछ लगे हैं जानने– निज देश भारतवर्ष को फिर हम लगे हैं मानने।"

अतीत की उज्जवलता की वर्तमान भारत से तुलना कर समसामयिक समस्याओं को समझने की प्रक्रिया में गुप्त जी का काव्य राजनीतिक प्रोत्साहन तथा सांस्कृतिक गौरव का प्रतीक बन गया। गुप्त जी अपने युग में बंधकर ही समसामयिकता से नहीं जुड़ते। उनका युगबोध कालातीत है। अतीत, वर्तमान और भविष्य के प्रति उनकी समदृष्टि विकासोन्मुख है। परंपरा में विश्वास रखते हुए गुप्त जी स्वस्थ परंपरा का विकास करते हैं। इसी कारण भारत में सदैव उनकी भारती गूंजित है।
"गुप्त जी साहित्य में अधिक अपने समय की उपज थे। इसलिए स्वयं वह और उनका युग अपने समय में इस दृष्टि से भी प्रासंगिक था। जो अपने युग में अप्रासंगिक है, किसी अन्य युग में उसकी प्रासंगिकता का कोई अर्थ नहीं होता। जिसमें स्वतंत्रता के लिए मर मिटने की अभिलाषा लिए भारतवासी आगे आए। भारतीयता की जैसी खोज इस रचना ने की, हिंदी साहित्य में किसी अन्य रचना का ऐसा योगदान प्रतीत नहीं होता।

निष्कर्ष

मैथिलीशरण गुप्त और उनकी जानकारियों के बीच ब्रिटिश शासन की शोषक नीतियों को दर्शाकर कवि ने स्पष्ट कर दिया कि भारत अपनी दुरावस्था के लिए स्वयं उत्तरदायी हैं और यह उसके अपने जड़ों से दूर जाने के कारण हुआ है। गुप्त जी भारतीय जनता को उन्हीं जड़ों से जोडना चाहते थे, जो भविष्य के लिए एक नई प्रवृत्ति की समृद्धि और गौरव को सिंचित करे।

संदर्भ सूची

1. विजय कुमार, मैथिलीशरण गुप्त का चौतन्य धर्म, पृ०सं० 17
2. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ०सं० 391
3. मैथिलीशरण गुप्त, भारत–भारती, पृ०सं० 72
4. मैथिलीशरण गुप्त, साकेत (द्वादश सर्ग), पृ०सं० 82
5. यही साकेत, (पंचम सर्ग), पृ०सं० 43
6. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ०सं० 392
7. मैथिलीशरण गुप्त, भारत–भारती (प्रस्तावना), पृ०सं० 02
8. यही, पृ०सं० 42
9. यही, पृ०सं० 132
10. यही, पृ०सं० 170
11. रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिंदी काव्य का इतिहास, पृ०सं० 150
12. मैथिलीशरण गुप्त, भारत–भारती, पृ०सं० 04